उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०हि०-पत्र

दिगंत- भाग- 2, गद्य भाग

शीर्षक - सम्पूर्ण क्रान्ति

लेखक - जयप्रकाश नारायण

प्रश्न:- लेखक की जीवनी पर प्रकाश डालें।

उत्तर:- लोकनायक जयप्रकाश नारायण का जन्म 11 अक्टूबर 1902 ई० को उत्तरप्रदेश के सिताबदियारा गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम फूलरानी एवं पिता का नाम हरसूदयाल था। बचपन में उन्हें 'बाउल' के नाम से पुकारा जाता था। बड़े होने पर जे०पी० एवं बाद में लोकनायक के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनकी पत्नी का नाम प्रभावती देवी था।

वे पटना कॉलेजिएट के छात्र थे। बाद में उन्होंने पटना कॉलेज में प्रवेश पाया। असहयोग-आन्दोलन के समय उन्होंने शिक्षा अधूरी छोड़ दी। 1922 ई० में शिक्षा प्राप्ति के लिए अमेरिका चले गये। विदेश में कई विश्वविद्यालयों में उन्होंने शिक्षा प्राप्त की।

जयप्रकाश जी 1929 में कॉंग्रेस पार्टी में शामिल हो गए। 1932 ई० में सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान जेल गये बाद में उन्होंने कॉंग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन किया। 1942 ई० के भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभायी। आजादी के बाद वे धीरे-धीरे सक्रिय राजनीति से अलग हो गये। 1974 ई० में उन्होंने छात्र आन्दोलन का नेतृत्व किया। आपातकाल के दौरान वे जेल भी गये। उनके मार्ग-दर्शन में जनता पार्टी का गठन हुआ।

जयप्रकाश नारायण 20 वीं सदी में भारत के एक प्रमुख समाजवादी विचार के क्रान्तिकारी नेता, समर्पित समाजसेवी एवं विद्रोही स्वाधीनता सेनानी थे।

उन्होंने कुछ कविताएँ भी लिखी। कुछ डायरी और निबंध भी प्रकाशित हुए। 1965 ई० में मैग्सेसे पुरस्कार एवं 1998 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महाविद्यालय (वसंत), पूर्णियाँ

13/04/2

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य

कवि- श्री रामनरेश त्रिपाठी

प्रश्न :- 'पथिक' खण्ड काव्य में कवि ने व्यक्तित्व संबंधी जो बातें कही है, उसका उल्लेख करें।

उत्तर :- आधुनिक कालीन प्रसिद्ध कवि श्री राम नरेश त्रिपाठी जी ने व्यक्तित्व को ऊपर उठाने के लिए एक बड़ी ही महत्वपूर्ण बातें कही है। उनका ऐसा मानना है कि आये दिन दुनिया से वास्तविकता का भाव दूर होता जा रहा है। आज सम्पूर्ण विश्व में सत्य को स्वीकार करने में लोग असमर्थ दिखाई पड़ रहे हैं। अप्राकृतिक तथ्यों को महत्व प्रदान किया जा रहा है। राष्ट्रीयता और देश प्रेम की भावना का अभाव सर्वत्र दिखाई पड़ रहा है। सारी दुनिया बिना सोचे-समझे उग्रवादियों के गिरोह में सम्मिलित होती जा रही है। गाँधीवादी विचारधारा को वामपंथी विचारधारा खुलकर चुनौती दे रही है। 'पथिक' का कवि गाँधीवादी विचारधारा का समर्थक है। गाँधीवादी विचारधारा के मानने वाले लोग ईश्वर की परम-सत्ता को सिर झुकाकर स्वीकार करते हैं। कवि-त्रिपाठी जी ने यह स्पष्ट अपने काव्य के माध्यम सन्देश दिया है कि ईश्वर ही इस संसार की रचना की है। उसी परमपिता परमेश्वर की असीम कृपा से पृथ्वी का उद्भव, पालन और प्रलय होता है।

वर्तमान संसार में उस अनन्त शक्ति को निराधार कल्पना कहकर टाल दिया है, जिसका भीषण दुष्परिणाम यह हुआ कि संसार के कोने-कोने में युद्ध, अत्याचार, बलात्कार इत्यादि का नग्न नृत्य हो रहा है। कवि ने मनुष्य को इस भूल के प्रति सावधान होने के लिए कहा है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुरखसेना, पूर्णियाँ

13/07/20

महिलाओं की बाल स्मृतियाँ भी जाग उठती हैं।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यासों में देशकाल और वातावरण का विस्तार से चित्रण हुआ है। कहा भी कहा गया है कि तत्कालीन साहित्यिक रचनाओं पर देशकाल और वातावरण का प्रभाव अवश्य पड़ता है। प्रेमचन्द का उपन्यास भी इससे अछूता नहीं है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० क० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ
13/09/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक- प्रेमचन्द

प्रश्न:- देश काल और वातावरण की दृष्टि से प्रेमचन्द की उपन्यास कला की समीक्षा कीजिए।

उत्तर:- उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यासों में भारतीय जीवन और समाज का विस्तृत चित्रण हुआ है। प्रायः भारतीय समाज की कोई भी प्रवृत्ति अछूती नहीं रही है। अन्य किसी उपन्यासकार में भारतीय समाज और भारतीय जीवन का ऐसा व्यापक चित्रण नहीं मिलता है। हिन्दी में लिखी गयी उनके उपन्यासों में प्रत्येक वर्ग के जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है।

तत्कालीन राजनीतिक संघर्ष और स्वतंत्रता-आन्दोलन की घटनाओं से उनके उपन्यास भरे पड़े हैं। अहिंसात्मक जन-आन्दोलन, किसान, मजदूर-आन्दोलन, उग्रवादियों के आतंकवादी कार्य आदि का व्यापक चित्रण उनके उपन्यासों में हुआ है। देशोद्धार और समाज-सुधार की धारा प्रायः प्रत्येक उपन्यास में प्रवाहित हुई है। इन सबके ऊपर शोषक और शोषित वर्ग का संघर्ष उभर कर ऊपर आ गया है।

वातावरण को सजीवता प्रदान करने के लिए मुंशी प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में प्रकृति के भी अनेक सुन्दर चित्र प्रस्तुत किये हैं। प्रेमचन्द ने प्रकृति के अलंकृत चित्र बड़े कौशल से प्रस्तुत किये हैं। वर्षा ऋतु और उसमें पड़े हुए झूलों का एक चित्र इस प्रकार है— "बरसात के दिन हैं, सावन का महीना, आकाश में सुनहरी घटाएँ छायी हुई हैं। रह-रहकर रिम-झिम वर्षा हो रही है। अभी तीसरा पहर है, पर ऐसा मालूम हो रहा है, शाम हो गई। आमों के बागों में झूला पड़ा हुआ है। लड़कियाँ भी झूल रही हैं और उनकी माताएँ भी। दो-चार झूल रही हैं, दो-चार झूला रही हैं, कोई कजली गाने लगती है, कोई बारहमासी। इस ऋतु में

शेष आगे-